दी गई सलाह • बिचड़ा गिराकर व उसे उखाड़कर कदवा किए गए खेतों में धान को लगाना काफी जटिल

धान की सीधी बुआई तकनीक किसानों के लिए अत्यंत ही लाभकारी : डॉ. रत्नेश

भास्कर न्यूज|पूसा

इस तकनीक से कम श्रम और कम लागत में किसानों को मिलता है अधिक उत्पादन

धान की सीधी बुआई तकनीक किसानों के लिए अत्यंत ही लाभकारी तकनीक है। किसानों के द्वारा इस तकनीक को साल दर साल अपनाते रहने से जहां मिट्टी के स्वास्थ्य में लगातार सुधार होता है। वहीं इस तकनीक से धान की खेती करने पर काफी कम पानी, कम श्रम और कम लागत लगने के साथ-साथ किसानों को अधिक उत्पादन भी मिलता है। ये बातें डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में जलवायु अनुकूल खेती का बागडोर संभाल रहे योजना के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. रत्नेश कुमार ने कही। उन्होंने बताया कि मॉनसून की सक्रियता में लगातार आ रही कमी और जलवायु परिवर्तन का दंश झेल रहे खासकर बिहार के किसानों के लिए धान की सीधी बुआई तकनीक बेहद लाभकारी और एक जांची परखी सफल तकनीक है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि धान की सीधी बुआई में किसान राजेंद्र श्वेता, राजेंद्र मसूरी, राजेंद्र नीलम, राजश्री, राजेंद्र भगवती, राजेंद्र सुभाषिनी आदि धान के प्रभेदों को लगाकर उच्च स्तरीय उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

विवि परिसर में ट्रैक्टर से की जा रही धान की सीधी बुआई।

ऐसे की जाती है धान की सीधी बुआई

कृषि वैज्ञानिक ने बताया धान की सीधी बुआई में धान के पूर्व अंकुरित बीजों को ट्रैक्टर से चलने वाली मशीन के माध्यम से खेतो में सीधी लाइन के तहत बो दिया जाता हैं। इस विधि से लगाई गई धान की फसल में पानी लगाकर रखने की जरूरत नहीं पड़ती है। जिससे 50 प्रतिशत से अधिक पानी की बचत होती है। यह विधि कीटनाशक और उर्वरक के उपयोग में कमी लाने के साथ-साथ श्रम लागत को भी काफी हद तक कम करती है। उन्होंने बताया की इतना ही नही इस विधि से धान के खेतों से निकलने वाली मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी गैसों के उत्सर्जन को भी काफी हद तक कम किया जाता है। इस विधि से धान में सिंचाई कम करने के कारण भूजल का होता है बहुत अधिक संरक्षण।

धान की रोपाई के बदले मशीन से करें बुआई, इसका अधिक लाभ मिलेगा

डॉ. रत्नेश कुमार ने बताया कि खेतों में धान का बिचड़ा गिराकर तथा उसे उखाड़कर कदवा किये गए खेतों में धान को लगाना काफी जटिल और खर्चीला तकनीक हैं। इसकी तुलना में किसान अगर धान की रोपाई के बदले इसकी सीधी बुआई करें तो किसानों को इसका अधिक लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि सरकार के दिशा-निर्देश पर धान की सीधी बुआई तकनीक को बढ़ावा देने के लिए विवि और उसके अधीनस्थ तमाम कृषि विज्ञान केंद्र लगातार कार्य कर रहे हैं जिसका परिणाम भी बहुत अच्छा मिल रहा हैं। उन्होंने बताया कि गत वर्ष विवि द्वारा खरीफ मौसम में 6000 एकड़ के क्षेत्रफल में सीधी बुआई तकनीक के तहत धान की फसल लगाई गई थी। इस तकनीक से लगभग 42 क्विंटल प्रति हेक्टेयर धान की उपज प्राप्त हुई जो सामान्य तकनीक से लगभग 7 क्विंटल प्रति हेक्टेयर अधिक है।

Dainik Bhaksar 09-07-2023